परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

जैतगढ़ में जयकारों के बीच स्वागत

२४ मार्च। आज प्रातः आचार्यवर ने शंभूगढ़ के तेरापंथ भवन से जैतगढ़ की ओर प्रस्थान किया। पूज्य आचार्यवर ने गांव के अनेक घरों का स्पर्श किया। पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में 'ब्राह्मणों की गली' को ग्राम पंचायत की सरपंच श्रीमती शान्तादेवी सेन ने 'आचार्य महाश्रमण मार्ग' के रूप में उद्घाटित किया। खारी नदी पार करते ही जयनगर गांव में ग्रामवासियों के विशेष अनुरोध पर आचार्यवर जैन स्थानक और कतिपय जैन घरों में पधारे।

जयनगर में जैन समाज के आठ घर हैं। वहां प्रदत्त अपने संक्षिप्त उद्बोधन में आचार्यवर ने सबको नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। इसी तरह मार्गवर्ती बालापुरा, दूल्हेपुरा आदि गांवों में विद्यार्थियों और ग्रामीणों को नशामुक्ति का उपदेश दिया। अनेक लोगों ने पूज्यवर से संकल्प स्वीकार किए।

लगभग सात किमी. का विहार कर आचार्यवर ने जयघोषों के बीच जैतगढ़ में प्रवेश किया। यहां आज महावीर भवन में श्री गणेशलालजी चोरड़िया परिवार द्वारा प्रदत्त भूमि पर नवनिर्मित हॉल का उद्घाटन किया। जैतगढ़ में पूज्य आचार्यवर का प्रवास राजकीय आदर्श माध्यमिक विद्यालय में रहा। इस विद्यालय की स्थापना सन् १९१० में हुई। विद्यालय के शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर अहिंसा यात्रा के साथ आचार्यवर के पावन पदार्पण को प्रधानाध्यापक श्री हरदेवलाल गुर्जर ने विद्यालय परिवार का परम सौभाग्य माना। विद्यालय परिसर में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'जीवन में इन्द्रियों का बड़ा महत्त्व है। पांचों इन्द्रियों से अलग-अलग ज्ञान प्राप्त होता है। काम व भोगों के आधार पर पांच इन्द्रियों में श्रोत्र व चक्षु कामी व शेष तीन भोगी इन्द्रियां हैं। वैसे काम और भोग शब्द साथ-साथ भी आते हैं। इन्द्रियों को विशुद्ध ज्ञान का माध्यम बनाया जा सकता है तो इन्हें भोक्ता भी बनाया जा सकता है। इन्द्रियां हमारी स्वामी न बनें, बल्कि हम इन्द्रियों के स्वामी बनें। मन हमारा गुलाम बने, हम मन के गुलाम न बनें।' कार्यक्रम में ग्रामीणों की अच्छी उपस्थिति रही।

वीर जयमल की धरती बदनोर में

२५ मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर आज प्रातः चव्हाणों का वाडिया, नायकों का वाडिया, जयसिंहपुरा, गायत्रीनगर होते हुए वीर जयमल की धरती बदनोर पधारे। मध्यवर्ती सभी गांवों में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने गांववासियों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित किया। पूज्यप्रवर की अभिप्रेरणा से विद्यार्थियों और ग्रामीणों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। बदनोर में पूज्य आचार्यवर का प्रवास आदर्श विद्या मंदिर में हुआ। स्वागत जुलूस में न केवल तेरापंथ व अन्य जैन समाज की संभागिता रही, अपितु गांव के गणमान्य व्यक्तियों सहित विभिन्न वर्गों के लोग भी बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के स्वागत हेतु उपस्थित हुए। भीलवाड़ा के विधायक श्री बिट्ठलशंकर अवस्थी, आसीन्द नगरपालिकाध्यक्ष श्री हंगामीलाल मेवाड़ा, स्थानीय तहसीलदार श्री सुखदेवसिंहजी, आसीन्द के तहसीलदार श्री रामबाबू वर्मा, अंजुमन कमेटी के सदर मुहम्मद रमजान खां के नेतृत्व में मुस्लिम बंधुओं ने आचार्यवर का स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा 'जैन आगमों में मूर्च्छा को परिग्रह माना गया है। हिंसा और अपराध में भी परिग्रह एक हेतु बनता है। अज्ञानता, अभाव और आवेश भी आदमी को अपराध की ओर धकेलते हैं। हर व्यक्ति के भीतर दो प्रकार की वृत्तियां मुख्य रूप से विद्यमान रहती हैं काम व क्रोध। काम और क्रोध हमारे निषेधात्मक भाव हैं, जो व्यक्ति को अपराध के लिए प्रेरित करते हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'आज हम वीर जयमल की धरती बदनोर में आए हैं। यहां की जनता ने हमारा स्वागत किया। यह उनकी सद्भावना और हमारे गुरुओं की उदात्तता का प्रभाव है।'

प्रवचन के पश्चात मुस्लिम विद्वान हुसैन सोरगर ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन श्री पारसमल रांका ने किया। प्रवचन पंडाल लोगों से खचाखच भरा था। पंडाल के परिपार्श्व में और गलियों में खड़े होकर भी लोगों ने पूज्यवर का प्रेरणादायी प्रवचन सुना।

एक विहार : नौ पड़ाव

२६ मार्च। आज प्रातः पूज्य आचार्यवर ने बदनोर से आसीन्द के लिए विहार किया। १७ किमी. की इस यात्रा में नौ पड़ाव हुए। ये पड़ाव न तो थकान के कारण हुए, न ही स्थानाभाव के कारण और न ही मार्ग की दुरूहता के कारण। इसका कारण बनी मार्गवर्ती गांव के ग्रामीणों की श्रद्धासिक्त भावना। मार्ग में देर से प्रतीक्षारत खड़े श्रद्धालुओं

की भावनाओं की अनदेखी अनुकंपा भाव से ओतप्रोत पूज्य आचार्यप्रवर कैसे कर सकते हैं? इसलिए आसीन्द पधारने से पूर्व आचार्यवर ने 'झडू का खेड़ा, सबलसागर, नारमगरा, ढाणीपुरा, परासोली, दड़ावट, सोपुरा, प्रतापपुरा इन आठ स्थानों पर पूज्यप्रवर ने चरण रोक कर पलक-पांवड़े बिछाए खड़े ग्रामवासियों को संबोधित किया। अनेक ग्रामवासियों ने नशा छोड़ने का संकल्प स्वीकार कर पूज्यवर को अपनी त्यागमयी भेंट प्रदान की। विद्यार्थियों और अन्य ग्रामीणों ने भविष्य में किसी भी प्रकार के नशे से बचने का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यप्रवर के दर्शन कर सभी प्रसन्नता और कृतार्थता की अनुभूति कर रहे थे। उनके प्रफुल्लित चेहरे उनके आन्तरिक उल्लास को अभिव्यक्ति दे रहे थे। परागांव में जैन समाज के अनेक घर हैं। आचार्यवर के स्वागत में आबालवृद्ध सभी सड़क पर आकर खड़े हो गए।

परासोली गांव का कांठेड़ परिवार अपने आराध्य का स्वागत कर आह्लादित था। इस गांव के सैकड़ों ग्रामीणों के साथ बड़ी संख्या में मुस्लिम बंधु भी आचार्यवर की अमृतमयी वाणी से लाभान्वित हुए। दड़ावट के सरपंच श्री पुष्करराज कुमावत ने अपने गांव के लोगों के साथ आचार्यवर द्वारा उपदिष्ट कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया। प्रतापपुरा में पूर्व विधायक श्री नानूराम कुमावत के आग्रहपूर्ण अनुरोध पर आचार्यवर कुछ देर के लिए उनके आवास पर विराजे। कुमावत परिवार और स्थानीय लोगों ने पूज्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया और जीवनोपयोगी शिक्षा प्राप्त की।

प्रतापपुरा से प्रस्थान कर आचार्यवर ने आसीन्द नगरपालिकाध्यक्ष श्री हंगामीलाल मेवाड़ा के आवास का स्पर्श किया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से उल्लसित श्री मेवाड़ा ने परिवार और आसीन्द नगर की ओर से आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। हजारों लोगों की श्रद्धा को स्वीकार करते हुए आचार्यवर लगभग १०.३५ बजे आसीन्द के महाप्रज्ञ भवन में पधारे।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पधारने से पूर्व मंत्री मुनि का अभिभाषण हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा 'सज्जन पुरुष को पंखे की उपमा दी गई है। वे स्वयं कष्ट सह कर दूसरों के ताप का निवारण करते हैं। महापुरुष स्वयं गांव-गांव घूम कर जनता के दुःखरूपी ताप का हरण करते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर के मन में जनता के प्रति अनुकंपा और अनुग्रह की भावना है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'मोह और मोक्ष ये दो विरोधी ध्रुव हैं। जब व्यक्ति मोह की ओर आगे बढ़ता है तो वह मोक्ष से दूर होता जाता है। जबकि मोक्ष की ओर गति होने से मोह स्वतः छूट जाता है। साधनाशील व्यक्ति मोह से उपरत होने का अभ्यास करता है। वह मात्र पदार्थ पर ही नहीं, अपने शरीर पर भी मोह नहीं करता। साधक इतना अभ्यस्त हो जाए कि जिससे वह देहासक्ति से विमुक्त हो सके।' अपने पूर्व प्रवास की स्मृति करते हुए आचार्यवर ने कहा 'आज हम अपने परिचित क्षेत्र आसीन्द में आए हैं। यहां मर्यादा महोत्सव के समय पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ लम्बा प्रवास किया था। आचार्यवर की अधूरी रही उस अहिंसा यात्रा को पूरा करने के लिए उसी अहिंसा यात्रा के साथ हम पुनः मेवाड़ आए हैं। तुलसी-महाप्रज्ञ युग ने हमें मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान किया। उससे सद्भाव की वृद्धि हुई। हम भी अहिंसा यात्रा के माध्यम से उन्हीं मूल्यों को आगे बढ़ा रहे हैं।'

नगरपालिका मंडल आसीन्द की ओर से अध्यक्ष श्री हंगामीलाल मेवाड़ा ने आचार्यवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया। आसीन्द श्रावक समाज की ओर से एक ऐसा परिपत्र पूज्यप्रवर के करकमलों में समर्पित किया गया, जिसमें विवाह आदि अवसरों पर पन्द्रह द्रव्यों की सीमा की गई है। तेरापंथ कन्यामंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। आज के कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक श्री रामलाल गुर्जर, नगरपालिका के उपाध्यक्ष श्री नवरतनमल बड़ोला, तहसीलदार श्री रामबाबू वर्मा आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

रात्रि में स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। पूज्यप्रवर का भी उद्‌बोधन हुआ।

ताप सहा, संताप हरा

२७ मार्च। आज प्रातः पूज्य आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन से बराणा की ओर विहार किया। पूर्व निर्धारित दस किमी. का विहार तेरह किमी. का हो गया। लगभग दो घंटे में संपन्न होने वाली इस यात्रा में लगभग साढ़े तीन घंटे लग गए। आचार्यवर स्वयं ताप सहन कर जन-जन का संताप हर रहे थे। कड़ी धूप के बीच चंदनवन की शीतलता प्रदान कर रहे थे। लोगों के भक्तिपूर्ण अनुरोध पर आज पूज्यवर पचास से अधिक घरों और प्रतिष्ठानों में पधारे। आचार्यवर ने आसीन्द थाने में पुलिस के जवानों को संबोधित किया। निवर्तमान थानाध्यक्ष श्री नरेन्द्र पारीक एवं नवनियुक्त थानाध्यक्ष श्री लक्ष्मणराम बिश्नोई ने आचार्यवर का स्वागत किया।

नगरपालिका द्वारा निर्माणाधीन अहिंसा द्वार के निकट पूज्य आचार्यवर की सन्निधि में संक्षिप्त कार्यक्रम चला।

नगरपालिकाध्यक्ष श्री हंगामीलाल मेवाड़ा ने परम पूज्यवर का स्वागत करते हुए बताया इस द्वार का निर्माण अहिंसा यात्रा की स्मृति में करवाया जा रहा है।

पूज्य आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर कहा 'इस मार्ग से गुजरने वाले हर व्यक्ति के मन में अहिंसा और अनुकंपा के भाव पुष्ट हों तो द्वार के नाम की अधिक सार्थकता होगी।'

इस संक्षिप्त कार्यक्रम के बाद लगभग डेढ़ किमी. का चक्कर लेकर पूज्यवर निर्माणाधीन आचार्य महाप्रज्ञ इंन्स्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस के विशाल परिसर में पधारे। इंस्टीट्यूट के चेयरमैन श्री रोशनलाल संचेती, श्रीमती आशा संचेती ने आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। भीलवाड़ा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र बोर्दिया ने इंस्टीट्यूट के संदर्भ में अवगति दी। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ के नाम से प्रकल्पित व निर्माणाधीन इस इंन्स्टीट्यूट का हमने अवलोकन किया है। जीवन में शिक्षा की परम अपेक्षा है। लौकिक विद्या के साथ अलौकिक विद्या का भी प्रशिक्षण चले। गुरुदेवश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अवदानों का इस संस्थान में प्रभाव झलके, यह अपेक्षित है।'

इंस्टीट्यूट से प्रस्थान कर पूज्य आचार्यवर गुर्जर समाज की आस्था के केन्द्र सवाई भोज मंदिर (देवनारायण मंदिर) में पधारे। मंदिर के महंत भूदेवदासजी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा 'आपके पदार्पण से आसीन्द की यह भूमि पावन हुई है। आसीन्द-हुरड़ा के विधायक श्री रामलाल गुर्जर ने आचार्यवर की अगवानी की। बड़ी संख्या में उपस्थित गुर्जर समाज व अन्य लोगों के बीच आचार्यवर का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ।

सवाई भोज मंदिर से आचार्यवर आदर्श विद्यापीठ संस्थान में पधारे। प्राचार्यश्री ध्रुवकुमार कविया ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। आचार्यवर ने विद्यार्थियों को सद्संस्कारी बनने की प्रेरणा दी। हजारों लोगों की अभिवंदना को स्वीकार करते हुए आचार्यप्रवर बराणा स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी का अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में कहा 'व्यक्ति में सहज ही स्वयं को अच्छा दिखाने की भावना होती है। सभ्य समाज में अच्छा दिखना भी एक कौशल माना जाता है। विशेष अवसरों पर गृहस्थ वस्त्राभूषणों के द्वारा स्वयं को अलंकृत करता है। इसके विपरीत साधु शरीर की साज-सज्जा की भावना से उपरत रहता है।'

नोखामंडी में दिवंगत शासनश्री साध्वी मोहनाजी (राजगढ़) की सहवर्तिनी साध्वी कनकश्रीजी आदि साध्वियों ने आज पूज्यवर के दर्शन कर अपनी भावना एक गीत के माध्यम से अभिव्यक्त की। साध्वी निर्मलयशाजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा 'सरदारशहर चातुर्मास के बाद वृद्ध साधु-साध्वियों से मिलने के लिए मैंने जो यात्रा की, उसके अंतर्गत नोखा में साध्वी मोहनाजी से मिलकर मेरी भावना सफल हो गई। उनकी भी गुरु-दर्शन की इच्छा पूरी हो गई। साध्वी मोहनाजी एक विशिष्ट साध्वी थीं। मैंने देखा वे एक मूर्ति के समान विराजमान रहतीं। उन्होंने मुझसे कहा कि आप दूर-दूर की यात्रा करवाएं। दीक्षा और अवस्था दोनों ही दृष्टियों से सर्व ज्येष्ठता और सर्व वरिष्ठता किसी-किसी को प्राप्त होती है।' इस अवसर पर श्रद्धेय आचार्यवर ने दिवंगत साध्वीश्री के संदर्भ में दो दोहे फरमाए

साध्वीवर्या मोहना, राजगढ़ी विख्यात।
शासनश्री समलंकरण, गुरु तुलसी आख्यात ॥
तेरापथ सुसंघ में, सबसे दीक्षा ज्येष्ठ।
गरिमामय आस्पद वरा, श्रमणीवर्या श्रेष्ठ ॥

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

२८ मार्च। आज बराणा से लाछुड़ा की ओर विहार करते हुए आचार्यवर दौलतगढ़ पधारे। दौलतगढ़ श्रद्धा का एक प्रमुख क्षेत्र है। वहां नवनिर्मीयमाण तेरापंथ भवन में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संघीय संस्कारों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर पूज्यप्रवर ने साध्वी जसवतीजी का चातुर्मास दौलतगढ़ घोषित किया। आचार्यवर के पदार्पण और चातुर्मास की घोषणा से दौलतगढ़ का संपूर्ण तेरापंथ समाज प्रसन्नता से सराबोर था।

वहां से पूज्यप्रवर लाछुड़ा रोड़ पर आयोजित अणुव्रत शैक्षिक सम्मेलन में पधारे। श्री देवीचन्द चांदमल बड़ोला कृषि फार्म हाउस में आयोजित इस कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी एवं मुनि मोहजीतकुमारजी ने अणुव्रत कार्यक्रमों की जानकारी दी। पूज्य आचार्यवर ने अपना प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे आसीन्द नगरपालिकाध्यक्ष श्री हंगामीलाल मेवाड़ा एवं विशिष्ट अतिथि थे उदयपुर के पुलिस अधीक्षक श्री दिलीपसिंह चुंडावत। कार्यक्रम में ग्रामीणों ने भी अच्छी संख्या में भाग लिया और आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार

किया।

लाछुड़ा की ओर विहार के दौरान मेवाड़ के अनेक क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के साथ हो गए। आज मेवाड़ की सड़कों पर लाछुड़ा की ओर लोगों का जैसे प्रवाह-सा बह रहा था। सबकी मंजिल एक थी। श्रद्धा के सामने तेज धूप पराजित हो रही थी। संघीय गीत और जयघोष सबके जोश को बढ़ा रहे थे। लाछुड़ा गांव के चारों ओर रंग-बिरंगे वाहन ही वाहन दिखाई दे रहे थे।

तेरापंथ भवन के बाहर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने साध्वियों के साथ परम श्रद्धेय आचार्यवर की अभिवंदना की। आचार्यवर प्रवास हेतु राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

मेवाड़ स्तरीय स्वागत समारोह

लगभग १२.१५ बजे मेवाड़ स्तरीय स्वागत समारोह का शुभारंभ पूज्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। विशाल एवं भव्य पण्डाल पूज्यवर के प्रवेश के साथ ही खचाखच भर गया। पण्डाल के परिपार्श्व में भी हजारों लोग खड़े थे। स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द चोरड़िया एवं स्वागत समारोह समिति के अध्यक्ष श्री बी.सी. भलावत ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। मेवाड़ तेरापंथ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल, पूर्व अध्यक्ष श्री सवाईलालजी पोखरना, श्री लक्ष्मणसिंहजी कर्णावट, वरिष्ठ श्रावक कार्यकर्ता श्री पदमचन्दजी पटावरी, अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के संयोजक श्री ख्यालीलालजी तातेड़, केलवा चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी के वक्तव्य हुए। मुनि हर्षलालजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से मंगलभावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजथान की पूर्व मुख्यमंत्री एवं राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती वसुन्धराराजे ने अपने वक्तव्य में कहा 'भाग-दौड़ की जिन्दगी और प्रदूषित वातावरण में साधु-संतों का सान्निध्य एवं प्रेरणा मन को शांति प्रदान करती है। संतों का आशीर्वाद मन को एक निश्चिंतता और आश्वस्तता देता है।' वर्तमान राजनीति के क्षेत्र में आई विकृति की ओर संकेत करते हुए श्रीमती राजे ने कहा 'आज की राजनीति में जातिवाद, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद हावी है। विद्वेष और प्रतिशोध की भावना से निर्णय होते हैं। कलह और झगड़े परिवारों में भी पहुंच गए हैं। ऐसे वातावरण में अहिंसा यात्रा एक आशा का संचार करने वाली है। अहिंसा यात्रा की शुरुआत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने की थी, जिसे आचार्यश्री महाश्रमणजी आगे बढ़ा रहे हैं। आदमी के जीवन में कठिनाइयां आती हैं, किन्तु आचार्यश्री जैसे महान संतों का आशीर्वाद और मार्गदर्शन उन समस्याओं के शमन में बहुत सहायक बनता है।'

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी के विशेष वक्तव्य के बाद महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा 'लोगों की इतनी विराट उपस्थिति को देखकर मन में एक प्रश्न उठता है एक संन्यासी के प्रति इतना आकर्षण क्यों? उत्तर भी मन के किसी कोने से उठता है जिस व्यक्ति का आभामंडल त्याग, तप व संयम की चेतना से भावित होता है, उससे लोग शांति और आनंद का अनुभव करते हैं। आचार्यप्रवर शान्ति के मसीहा हैं। जिस मिशन के साथ आप मेवाड़ पधारे हैं, वह लोकव्यापी बने, सबके मन में व्रत-संकल्प की चेतना जागे।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'सत्य की अवस्थिति में मंगल होता है, इसलिए व्यक्ति को सत्यभाषी होना चाहिए। यह सबसे बड़ी साधना है। जीवन में आदर्श होना चाहिए। आदर्शविहीन जीवन व्यर्थ जीवन है। सचाई के सामने हर समस्या और कठिनाई निरस्त हो जाती है।'

परिपूर्ण विकास की परिकल्पना को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'विकास का चतुष्कोण परिपूर्ण विकास है। भौतिक और आर्थिक विकास का भी अपना महत्त्व है, किन्तु नैतिक और आध्यात्मिक विकास के बिना भौतिक और आर्थिक विकास अपनी सार्थकता और महत्त्व खो देते हैं। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से संयम का जो संदेश दिया, वह व्यक्ति सुधार और समाज सुधार का मुख्य आधार है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'विधायक, सांसद और राजनीति में संलग्न अन्य लोग समाज, प्रान्त और देश की सेवा करते हैं। आलोचना के बीच वे अपना काम करते हैं। राजनीति कोई बुरी चीज नहीं है, बशर्ते कि वह सेवा का माध्यम बनी रहे। राजनीति में मूल्यवत्ता नितान्त अपेक्षित है। बसुन्धराजी पहले भी कई बार आ चुकी हैं। इनका एक रूप राजनेत्री का है, दूसरा रूप एक भक्तिमान महिला का है। शक्ति और भक्ति से समन्वित ये खूब अच्छा काम करती रहें।'

मेवाड़ आगमन की चर्चा करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'अहिंसा यात्रा के साथ मेवाड़ आकर हमने पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अवशिष्ट कार्य को पूरा करना प्रारंभ कर दिया है। पूज्यवर के महाप्रयाण के बाद ही मैंने यह चिंतन

कर लिया था कि मुझे मेवाड़ और मारवाड़ जाना है। मुझे प्रसन्नता और संतोष है कि आज मैं मेवाड़ में मेवाड़ी श्रावकों के सामने हूं। अहिंसा यात्रा का मुख्य उद्देश्य जन-जन के मन में अनुकंपा की चेतना का विकास है। इसके अन्तर्गत साम्प्रदायिक सौमनस्य कन्या भ्रूणहत्या निषेध, नशामुक्ति एवं यथासंभव ईमानदारी के परिपालन की चेतना जागे।' आचार्यवर ने विशेषतः तेरापंथ समाज हेतु पारिवारिक सौमनस्य, नशामुक्ति एवं भ्रूणहत्या के परित्याग की प्रेरणा दी। पूज्यवर ने कहा 'तेरापंथ की जन्मभूमि, महाराणा प्रताप की शौर्यभूमि व मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी की जन्मभूमि पर हम मंत्री मुनिश्री एवं साध्वीप्रमुखाजी के साथ आए हैं। हमारी अभीप्सा है मेवाड़ प्रवास में हम कुछ जन कल्याणकारी काम करें। मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों का सहयोग इसमें अपेक्षित है।'

साध्वी विद्यावतीजी 'प्रथम' (श्रीडूंगरगढ़) ने अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ प्रथम बार पूज्य आर्चावर के दर्शन किए। साध्वियों ने अपनी प्रसन्नता को गीत के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। समागत अतिथियों को साहित्य और स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया गया। स्वागत समिति के सह संयोजक श्री राजेन्द्र भलावत ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री जसराज चोरड़िया ने किया।

२६ मार्च। पूज्य आचार्यवर ने आज प्रातः भ्रमण के दौरान अनेक घरों सहित तेरापंथ भवन का भी स्पर्श किया। अनशनरत श्राविका कमलाबाई को दर्शन दिए और उन्हें आराधना के कुछ पद्य सुनाए।

लाछुड़ा में श्रावक सम्मेलन

आजका प्रातःकालीन कार्यक्रम श्रावक सम्मेलन के रूप में आयोजित था। 'सामाजिक रूढ़ियां : कारण और निवारण' विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री डॉ. सी. पी. जोशी। उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र में आचार्यश्री के आगमन को नये युग का प्रारंभ बताते हुए कहा 'देश में सड़कें बनाने और परिवहन व्यवस्था को सुचारु बनाने का काम तो हम कर सकते हैं, लेकिन संस्कारों की सड़क तो आचार्यश्री जैसे मनीषी संत ही बना सकते हैं। हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि मेवाड़ को आचार्यश्री का दीर्घकालीन प्रवास मिलेगा।'

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा 'समाज में शिक्षा के विकास के साथ रूढ़ियां भी उन्मूलित हुई हैं। रही-सही रूढ़ियों को भी दूर कर हम स्वस्थ समाज संरचना में सहभागी बनें।'

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने कहा 'आचार्यश्री की इस मेवाड़ यात्रा में ऐसा सामाजिक परिवर्तन घटित हो, जिसे युगों-युगों तक लोग स्मृति में रखें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने संबोधन में कहा 'तेरापंथ एक आचार्य केन्द्रित धर्मसंघ है। यह अन्य धर्मसंघों के लिए एक मिशाल है। संघ में समय-समय पर अनेक परिवर्तन हुए हैं। तेरापंथ द्विशताब्दी के अवसर पर 'नया मोड़' कार्यक्रम सामने आया। यह कार्यक्रम बहुत प्रभावी और असरकारक रहा। समाज को अनेक रूढ़ियों से मुक्ति मिली। कुछ अभी भी अवशेष हैं। कुछ नए सिरे से जन्म ले रही हैं। उनके उन्मूलन के लिए व्यवस्थित रूप से कोई कार्ययोजना बनाई जाए।' महाश्रमणीजी ने पारिवारिक सौमनस्य के संदर्भ में जनता को उत्प्रेरित किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'दुनिया में हिंसा और अहिंसा दोनों चलती हैं। दोनों के बिना जीवन चलाना बहुत कठिन है। गृहस्थ के लिए आरंभजा और प्रतिरोधजा हिंसा आवश्यक हो जाती है, किन्तु संकल्पजा हिंसा से उसे बचना चाहिए। समाज में कुरीतियां भी देखने को मिलती हैं। उन पर गंभीरता से चिंतन और चर्चा हो तथा उनके संदर्भ में ठोस निर्णय लिए जाएं तो उन्हें निराकृत अथवा अल्पीकृत किया जा सकता है। इससे समाज में परिवर्तन घटित हो सकता है।'

अ.भा. तेयुप के संगठन मंत्री श्री अविनाश नाहर, श्री निर्मल गोखरू एवं श्री जुगराज नाहर ने अमृत महोत्सव के अवसर पर तेरापंथ समाज में चलाए जाने वाले नशा मुक्ति अभियान हेतु विशेष रूप से निर्मित फोल्डर पूज्य चरणों में उपहृत किया। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री श्री विजयराज सुराणा ने नशामुक्ति के ढाई हजार संकल्पपत्र समर्पित किए। श्री राजू चोरड़िया ने अहिंसा यात्रा की सफलता के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रेषित सन्देश का वाचन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

लाछुड़ा प्रवास : कुछ उल्लेखनीय तथ्य

- मेवाड़स्तरीय स्वागत समारोह में मेवाड़ के प्रायः सभी अंचलों से लोग बसों, कारों एवं निजी वाहनों से पहुंचे। प्रवासी मेवाड़ी भी बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में संभागी बने। स्वागत समारोह में लगभग दस हजार की उपस्थिति आंकी गई।
- स्वागत समारोह में प्रदत्त परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का प्रवचन इतना प्रभावी और हृदयस्पर्शी था कि छह बार

लोगों ने 'ॐ अर्हम' की ध्वनि के साथ अपना हर्ष व्यक्त किया।

- 'मुझे संतोष है मैं मेवाड़ आ गया और मेवाड़ी श्रावकों के सामने बैठा हूं' आचार्यवर के इस मार्मिक वाक्य ने पंडाल में उपस्थित श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। जनमेदिन ने हाथ लहरा कर अपनी आस्था और आह्लाद को व्यक्त किया।
- पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती बसुन्धराराजे ने कार्यक्रम में निर्धारित कुर्सी पर न बैठकर एक श्रोता के रूप में नीचे बैठ कर आचार्यश्री का प्रवचन सुना। आचार्यवर ने उनकी इस विनम्रता की सराहना की।
- स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। रामसनेही चिकित्सालय के सहयोग से आयोजित इस शिविर में ४९ युनिट रक्त का संग्रह किया गया। इसके साथ डॉ. सुरेश भददा ने २२५ लोगों के नेत्रों की जांच की तथा अपेक्षित निःशुल्क दवा दी।
- लाछुड़ा प्रवास के उपलक्ष्य में तेरापंथ समाज ने 'आचार्य महाश्रमण आरोग्य केन्द्र' खोलने का निर्णय लिया। कुछ ही क्षणों में पैंतालीस लाख रुपये एकत्र हो गए। श्री बी.सी. भलावत ने नई बस अणुव्रत समिति को भेंट की। आरोग्य केन्द्र हेतु राज्यसभा सांसद श्री वी.पी. सिंह ने दस लाख एवं विधायक रामलाल गुर्जर ने अपने कोटे से सात लाख के अनुदान की घोषणा की।
- पूज्यप्रवर के लाछुड़ा आगमन की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए श्री अशोककुमार कंवरलाल भलावत परिवार ने 'ग्रीन लाछुड़ा प्रोजेक्ट' के अन्तर्गत ११०० वृक्ष लगवाने का संकल्प व्यक्त किया।
- डोम के आकार में बने विशाल एवं भव्य प्रवचन पंडाल में दूर बैठे लोग भी प्लाज्मा टीवी के माध्यम से वक्ताओं को बहुत निकटता से देख और सुन रहे थे। कार्यकर्ता पूर्ण रूप से सजग थे। इसलिए इतनी भीड़ में कोई अवांछित घटना नहीं हुई। अपवादस्वरूप असामाजिक तत्वों द्वारा जेबतराशी के कुछ प्रयास किए गए। कार्यकर्ताओं ने उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया।
- लाछुड़ा प्रवेश के समय और प्रवास के दूसरे दिन आचार्यवर ने अनशनरत श्राविका श्रीमती कमलादेवी चोरड़िया (धर्मपत्नी-श्री शांतिलाल चोरड़िया) को दर्शन दिए। उन्हें आराधना के कुछ पद्य सुनाए। २९ मार्च को रात्रि में लगभग आठ बजे संथारा संपन हो गया। गुरु सन्निधि में संथारा सुसंपन्न होने पर परिवार ही नहीं पूरे समाज को अतिरिक्त प्रसन्नता का अनुभव हुआ।
- दो दिवसीय प्रवास में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती बसुन्धराराजे, केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री डॉ. सी. पी. जोशी के अलावा स्थानीय सांसद वी. पी. सिंह, विधायक रामलाल गुर्जर, भीलवाड़ा के विधायक श्री बिट्ठलशंकर अवस्थी, भीम के विधायक श्री हरिसिंह, भाजपा की प्रदेश उपाध्यक्ष कीर्तिकुमारी, भीलवाड़ा नगर परिषद के सभापति श्री अनिल बल्दवा, रायपुर के विधायक कैलाश त्रिवेदी, जहाजपुर के विधायक श्री शिवजीराम मीणा, जिलाप्रमुख श्रीमती सुशीला साल्वी, कांग्रेस जिलाध्यक्ष श्रीमती मधु जाजू, भीलवाड़ा के कलेक्टर श्री ओंकारसिंह, आसीन्द नगरपालिकाध्यक्ष श्री हंगामीलाल मेवाड़ा, स्थानीय सरपंच सुआलाल नायक, स्थानीय एस.डी.एम. थानाध्यक्ष आदि अनेक विशिष्ट व्यक्ति पूज्य चरणों में उपस्थित हुए और मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- लाछुड़ा इकरंगा क्षेत्र है। यहां श्रद्धा के लगभग बीस घर खुले हैं। प्रायः लोग सूरत और उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। आचार्यवर के पदार्पण पर चालीस घर खुल गए। सभी घरों के पारिवारिक सदस्य आचार्यवर के दर्शन एवं उपासना हेतु अपने गांव पहुंचे। मुख्यतः गुर्जर व रावत बहुल इस गांव में प्रायः सभी ओसवाल जैन तेरापंथी परिवार ही हैं।